बोधगम्यता (द्विभाषिक) (भाग 3)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, +91-8130392354, 56, 57, 59

Web: www.drishtiias.com
E-mail : drishtiacademy@gmail.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

अंतर्राष्ट्रीय (International)

Part-I

Instructions: Read the following passages carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

India's new foreign policy was not all about "big power diplomacy". It involved a strong effort to find political reconciliation with two of its large neighbours—Pakistan and China. A new peace process under way since 2004 has produced the first important steps towards a normalization of Indo-Pak relations, including a serious negotiation on the Kashmir dispute. At the same India is also involved in purposeful negotiations to end the long-standing boundary dispute with China. For the first time since its independence, India is now addressing its two of most important sources of insecurity—unresolved territorial questions with Pakistan and China.

India embarked on a series of policy innovations that demanded greater generosity and a willingness to walk more than half the distance in resolving its many accumulated problems with smaller neighbours. As it embarked upon the policy of economic globalization, India also saw the importance of promoting regional economic integration in the Subcontinent, which was a single market until the Partition of the region took place in 1947. Unlike in the past, when it sought to keep major powers out of the Subcontinent, India is now working closely with the great powers in resolving the political crises in Nepal and Sri Lanka. India's unilateralism in the region is increasingly being replaced by a multilateral approach. India has also supported the participation of China, Japan, and the U.S. as observers in the principal mechanism for regionalism.

Even as India seeks to define a new approach towards smaller neighbours, the regions abutting the Subcontinent beckoned India to reassert its claim for a say in the affairs of the Indian Ocean and its littoral. The 1990s saw India making a determined effort to reconnect with its extended neighbourhood in South East Asia, Afghanistan and Central Asia, and the

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इनके नीचे दिए हुए प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

भारत की नई विदेश नीति "बड़ी शक्तियों की कूटनीति" से ही संबंधित नहीं है। इसमें भारत के दो बड़े पड़ोसी पाकिस्तान एवं चीन के साथ राजनीतिक सामंजस्य स्थापित करने के लिए मजबूत प्रयासों को शामिल किया गया है। 2004 से जारी शांति प्रक्रिया ने भारत-पाक संबंधों को सामान्य बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है, जिसमें कश्मीर विवाद पर एक गंभीर वार्ता भी शामिल है। साथ ही चीन के साथ भी लंबे समय से चले आ रहे सीमा विवाद को हल करने के लिए भी भारत ने उद्देश्यपकर वार्ताएँ आयोजित कीं। स्वतंत्रता के पश्चात पहली बार भारत असुरक्षा के दो सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोतों- पाकिस्तान एवं चीन के साथ अनसुलझे क्षेत्रीय मुद्दों पर बातचीत कर रहा है। अपने छोटे पड़ोसियों के साथ विद्यमान समस्याओं को सुलझाने की दिशा में भारत ने अभी तक जो आधी-अधूरी दूरी तय की है, उसके लिए उसने कई नीतिगत नवाचार अपनाए जिनमें अत्यधिक उदारता एवं इच्छाशक्ति की आवश्यकता थी। जैसे कि भारत ने आर्थिक वैश्वीकरण की नीति की शुरुआत की, इसके अलावा भारत ने उपमहाद्वीप में क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण के महत्त्व को भी समझा, जो 1947 में हुए विभाजन तक एकल बाजार ही था। विगत समय के विपरीत, जब भारत बड़ी शक्तियों को उपमहाद्वीप से बाहर रखने की कोशिश करता था, अब भारत नेपाल और श्रीलंका में विद्यमान राजनीतिक संकट को सुलझाने के लिए बड़ी शक्तियों के साथ मिलकर काम कर रहा है। इस क्षेत्र में भारत की एकपक्षीयता को तेजी से बहुपक्षीयता के दृष्टिकोण ने प्रतिस्थापित कर दिया है। भारत ने क्षेत्रीय संगठनों में पर्यवेक्षक के रूप में चीन, जापान एवं अमेरिका की सहभागिता का समर्थन भी किया है।

अपने छोटे पड़ोसियों के प्रति भारत नए दृष्टिकोण को विकसित करने की दिशा में कार्य कर रहा है। उपमहाद्वीप से लगा हुआ क्षेत्र भारत को इस बात का संकेत दे रहा है कि वह हिन्द महासागर और उसके तटवर्ती क्षेत्र में अपने दावे को मजबूत करे। 1990 के दशक में देखा गया कि दक्षिण-पूर्व एशिया, अफगानिस्तान, मध्य एशिया और मध्य-पूर्व तक विस्तृत होते अपने पड़ोस के साथ संबंधों को बढ़ाने की दिशा

Part-II

Instructions: Read the following passages carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

The South Asian region is energy deficient as it does not produce enough oil and gas to meet its needs. Thus, it depends heavily on imports. In the emerging energy and environmental crises, the SAARC region stands quite vulnerable, compared to developed economies. It is estimated that the energy needs of South Asia will increase three times in the next 15 to 20 years.

Some of the SAARC member states have considerable experience in using environment-friendly, renewable energy sources. This includes wind, solar and biogas plants in India, micro-hydro plants in Nepal, micro-financing for rural energy in Bangladesh, grid connected small hydro plants in Sri Lanka and small hydro and solar plants in Pakistan.

The clean energy resource potential is yet to be exploited as countries like Nepal, Bhutan and Pakistan either remain energy deficient or are not able to optimally harness and utilise their resources. The dependence on import calls for greater diversification of energy options especially towards renewable resources.

1. In the emerging energy and environmental crises, the SAARC region stands quite vulnerable as compared to the developed economy because—
   (i) It depends heavily on imports.
   (ii) Diversification of energy options especially towards renewable resources remains unexplored.

   Which one of the statements given above is/are correct?
   (a) Only (i) (b) Only (ii)
   (c) Both (i) and (ii) (d) None of these

2. Which one of the following statements conveys the key message of the passage?
   (a) India, a SAARC member country has a considerable experience in environmental-friendly, renewable energy resources than other member countries.

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इनके नीचे दिए हुए प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

दक्षिण-एशिया क्षेत्र में ऊर्जा की कमी है क्योंकि यहाँ आवश्यकता के अनुरूप तेल और गैस का उत्पादन नहीं होता। इसलिए यह आयात पर बहुत अधिक निर्भर है। उभरते हुए ऊर्जा एवं पर्यावरण संकट के समय में सार्क क्षेत्र विकसित अर्थव्यवस्थाओं की अपेक्षा अधिक असुरक्षित है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि अगले 15–20 वर्षों में दक्षिण-एशिया की ऊर्जा आवश्यकताओं में तीन गुना वृद्धि हो जाएगी।

सार्क के कुछ सदस्य देशों को पर्यावरण-अनुकूल, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करने का पर्याप्त अनुभव है। इसमें भारत के पवन, सौर एवं बायोगैस संयंत्र, नेपाल के लघु-जल विद्युत संयंत्र, बांग्लादेश की ग्रामीण ऊर्जा हेतु लघु वित्त योजनाएँ, श्रीलंका के ग्रिड से जुड़े लघु जल विद्युत संयंत्र और पाकिस्तान के लघु जल विद्युत एवं सौर ऊर्जा संयंत्र शामिल हैं।

स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों का दोहन अभी बाकी है क्योंकि नेपाल, भूटान और पाकिस्तान जैसे देश या तो अब भी ऊर्जा विपन्न हैं या फिर अपने संसाधनों का पर्याप्त उपयोग और विकास करने में सक्षम नहीं हैं। आयात पर निर्भरता ऊर्जा विकल्पों के अधिकाधिक विविधीकरण की आवश्यकता उत्पन्न करती है विशेषकर नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों के संदर्भ में।

1. उभरते हुए पर्यावरण एवं ऊर्जा संकट के मद्देनजर सार्क क्षेत्र विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अधिक असुरक्षित है क्योंकि—
   (i) यह आयात पर अत्यधिक निर्भर है।
   (ii) ऊर्जा विकल्पों, ख़ास तौर से नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विविधतापूर्ण उपयोग नहीं हो सका है।

   उपरोक्त कथनों में कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल (i) (b) केवल (ii)
   (c) (i) और (ii) दोनों (d) इनमें से कोई नही।

2. इनमें से किस कथन में गद्यांश का मुख्य संदेश समाहित है?
   (a) सार्क के सदस्य देशों में पर्यावरण-अनुकूल नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के मामले में भारत को अन्य सदस्य देशों के मुकाबले अधिक अनुभव है।

अर्थव्यवस्था (Economy)

Part-II

Instructions: Read the following passages carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

Effective corporate governance practices are essential to achieving and maintaining public trust and confidence in the banking system, which are critical to the proper functioning of the banking sector and economy as a whole. Poor corporate governance can contribute to bank failures, which can in turn pose significant public costs and consequences due to their potential impact on any applicable deposit insurance system and the possibility of broader macroeconomic implications, such as contagion risk and impact on payment systems. This has been illustrated in the financial crisis that began in mid-2007. In addition, poor corporate governance can lead markets to lose confidence in the ability of a bank to properly manage its assets and liabilities, including deposits, which could in turn trigger a bank run or liquidity crisis.

Good corporate governance requires appropriate and effective legal, regulatory and institutional foundations. A variety of factors, including the system of business laws, stock exchange rules and accounting standards, can affect market integrity and systemic stability. Such factors, however, are often outside the scope of banking supervision. Supervisors are nevertheless encouraged to be aware of legal and institutional impediments to sound corporate governance, and to take steps to foster effective foundations for corporate governance where it is within their legal authority to do so. Where it is not, supervisors may wish to consider supporting legislative or other reforms that would allow them to have a more direct role in promoting or requiring good corporate governance.

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इनके नीचे दिए हुए प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

बैंकिंग व्यवस्था में लोगों का विश्वास हासिल करने और उसे बनाए रखने के लिए प्रभावी निगमित अभिशासन कार्य प्रणालियाँ अत्यावश्यक हैं, क्योंकि बैंकिंग क्षेत्र और संपूर्ण अर्थव्यवस्था के सुचारू कार्य संचालन के लिए ये अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। कमजोर निगमित अभिशासन से बैंकों को असफलताएँ हाथ लगती हैं, और किसी भी प्रयोज्य जमा बीमा प्रणाली पर इन असफलताओं के भावी प्रभाव और वृहद् समष्टि अर्थशास्त्रीय निहितार्थों की संभावना के चलते सार्वजनिक लागत अत्यधिक बढ़ जाती है और इसके कई तरह के परिणाम देखने को मिलते हैं, जैसे कि संसर्ग जोखिम और भुगतान प्रणाली पर प्रभाव। यह बात 2007 के मध्य में शुरू हुए वित्तीय संकट के दौरान साबित भी हो गई। इसके अलावा, कमजोर निगमित अभिशासन के चलते बैंक द्वारा व्यवस्थित तरीके से परिसंपत्तियों एवं देनदारियों, जिनमें जमाएँ भी शामिल हैं, के प्रबंधन में बाजार का विश्वास खोने का खतरा बढ़ सकता है, जिससे बैंक से जमाएँ निकालने की होड़ अथवा तरलता संकट आ सकता है।

अच्छे निगमित अभिशासन के लिए उचित एवं प्रभावी वैधानिक, नियामकीय अथवा संस्थागत बुनियाद आवश्यक होती है। अनेक प्रकार के कारक, जिनमें व्यावसायिक कानूनों की व्यवस्था, स्टॉक एक्सचेंज के नियम तथा लेखांकन मानक शामिल हैं, बाजार की सत्यनिष्ठा और संस्थागत स्थिरता को प्रभावित कर सकते हैं। हालाँकि इस तरह के कारक बैंकिंग निरीक्षण के दायरे से बाहर होते हैं, फिर भी अच्छे निगमित अभिशासन के लिए निरीक्षकों को वैधानिक एवं संस्थागत बाधाओं के प्रति जागरूक रहने के लिए और जहाँ तक उनके कानूनी दायरे में संभव हो निगमित अभिशाासन की मजबूत बुनियाद बनाने हेतु प्रयास करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। अगर ऐसा कार्य उनके कानूनी दायरे से बाहर का है, तो निरीक्षक सहायक विधायन अथवा अन्य सुधारों, जिनसे अच्छे निगमित अभिशासन को सुनिश्चित करने में उनकी अधिकाधिक प्रत्यक्ष भूमिका संभव हो सकती है, पर भी विचार कर सकते हैं।

Part-II

Instructions: Read the following passages carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

"The focus of central banks on asset market development has increased in the aftermath of liberalization of financial markets since the 1980s. Asset prices include the prices of financial assets, including gold and real estate. The volatility associated with asset prices has led to concerns that large changes in asset prices might disrupt economic activity and endanger price stability as well as financial stability. Bursting of asset bubbles and consequent macro imbalances can turn a mild downturn into deflation, as was observed in Japan. It is argued that a correct measure of inflation should include asset prices because they reflect the current money prices of claims on future as well as current consumption.

The conventional wisdom is that central banks should ignore swings in asset prices. This is based on the belief that it is impossible to disentangle that portion of asset price movements which is related to fundamentals from that which is related to market idiosyncrasies. Asset prices would be of interest only to the extent that they provide useful information about the state of the economy. Adjustment of interest rates in response to asset price misalignments - even when inflation remains on track - enables central banks to reduce the long-term volatility of both inflation and output. A modest rise in interest rates above the level required to keep inflation on track would curb borrowing and over-investment.

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इनके नीचे दिए हुए प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

''1980 के दशक के दौर में वित्तीय बाज़ार में उदारीकरण के परिणामत: केंद्रीय बैंकों का ध्यान संपत्ति बाज़ार के विकास की ओर बढ़ा है। संपत्ति मूल्यों के अंतर्गत वित्तीय संपत्तियों, जिनमें सोना और ज़मीन व भवन-निर्माण (रियल इस्टेट) शामिल हैं, को शामिल किया जाता है। संपत्ति मूल्यों से संबद्ध अस्थिरता ने इस बात की चिंता बढ़ायी है कि संपत्ति मूल्यों में व्यापक परिवर्तन के कारण आर्थिक गतिविधियाँ ठप्प पड़ सकती हैं तथा मूल्य-स्थिरता के साथ-साथ वित्तीय स्थिरता को भी संकट में डाल सकती है। संपत्ति मूल्यों की तेज़ी तथा इसके परिणामत: उत्पन्न व्यापक अस्थिरता के कारण मूल्यों की हल्की सी कमी भारी मुद्रा अवस्फीति (क्मसिंजपवद) की स्थिति पैदा कर सकती है, जैसा कि जापान में देखा गया था। ऐसा तर्क दिया जाता है कि मुद्रा-स्फीति के उचित मापन हेतु संपत्ति मूल्यों को शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि वे भविष्य की ज़रूरतों के वर्तमानकालिक मुद्रा मूल्य के साथ-साथ वर्तमान उपभोग के स्तर को भी अभिव्यक्त करते हैं।

पारंपरिक बुद्धिमत्तापूर्ण समझ के अनुसार, केंद्रीय बैंकों को संपत्ति मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों को नज़रअंदाज करना चाहिए। यह समझ इस मान्यता पर निर्भर है कि संपत्ति मूल्यों के परिवर्तन के उन कारणों को, जो आधारभूत अर्थव्यवस्था से जुड़े हैं, को उन कारणों से अलग करके देखना असंभव है जो बाज़ार की सनक भरी हरकतों से जुड़े हैं। संपत्ति मूल्य उस सीमा तक ही रुचि का विषय हो सकते हैं, जहाँ तक वे अर्थव्यवस्था की स्थिति के बारे में ज़रूरी सूचना प्रदान करते हों। संपत्ति मूल्यों की अस्थिरता के प्रत्युत्तर में ब्याज-दरों का सामंजस्य करना-वह भी तब जबकि मुद्रास्थिति पटरी पर हो-केंद्रीय बैंकों को अवसर प्रदान करता है कि वह मुद्रा-स्फीति और उत्पादन से संबद्ध अधिक समय तक रहने वाली अस्थिरता को कम कर सके। ब्याज-दरों में अपेक्षित स्तर से हल्की सी तेज़ी जो मुद्रा-स्फीति को पटरी पर रखने के लिए ज़रूरी है, के कारण अति-निवेश व उधारी की प्रवृत्ति कम हो जाती है।''

विविध (Miscellaneous)

Part-I

Instructions: Read the following passage carefully and answer the questions given below it.

Passage – 1

Physicists are always looking for some universal laws or theory or for doing some fundamental experiments. In chemistry also we do that, we verify theory. In addition to everything, there is somethings called chemical intuition. People do not talk about physical intuition as much as chemical intuition. There is a peculiar feeling that something will work, why and how are unanswered; a new material will be formed, a new process will created, etc. Chemical intuition is difficult to get; one has to work hard for it and over a period of years people get it. Some people never get it and die without it, after working for 50 years. Those who have intuition like Michael Faraday, one of the greatest chemists in the world, do unbelievable things. How did Faraday think of electricity and magnetism? How did he conduct electrolysis experiments when electron was not known? It still amazes me that he discovered benzene in those days. When he made the gold nanoparticles first, how did he know they were nanoparticles? There was no device to measure, no microscope. Those who develop this intuitive ability succeed. That is true of all subjects but more so in chemistry.

1. According to the passage, what do we understand by "Chemical intuition"?
   (1) It is the inner conscience of a researcher which even he cannot explain.
   (2) No device can measure it.
   (3) Michael faraday definitely had it.

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इसके नीचे दिए हुए प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

भौतिक शास्त्री हमेशा कुछ सार्वभौमिक नियमों अथवा सिद्धांतों या कुछ आधारभूत अनुप्रयोगों की तलाश में रहते हैं। रसायन विज्ञान में भी हम यही सब करते हैं, हम सिद्धांतों को प्रमाणित करते हैं। इसके अतिरिक्त रसायन विज्ञान में कुछ ऐसा होता है, जिसे हम रासायनिक अंतर्ज्ञान कहते हैं। लोग भौतिक अंतर्ज्ञान के बारे में उतनी चर्चा नहीं करते, जितनी कि रासायनिक अंतर्ज्ञान के बारे में। एक अजीब सी सोच बन जाती है कि कुछ तो होगा, लेकिन क्यों और कैसे होगा इन बातों का कोई जवाब नहीं होता; ऐसे ही एक नए पदार्थ का निर्माण होगा और एक नई प्रक्रिया अपनाई जाएगी आदि।

रासायनिक अंतर्ज्ञान प्राप्त करना कठिन होता है; इसके लिए व्यक्ति को कठोर परिश्रम करना होता है और एक लंबी समयावधि के बाद ही लोग इसे प्राप्त कर पाते हैं। कुछ लोग कभी भी इसे प्राप्त नहीं कर पाते और 50 साल तक कार्य करते रहने के बाद इसके बिना ही मर जाते हैं। जिन लोगों को माइकल फैराडे, विश्व के महानतम रसायन शास्त्री की तरह अंतर्ज्ञान होता है, ऐसे लोग कुछ अविश्वसनीय कार्य कर दिखाते हैं। फैराडे ने विद्युत एवं चुम्बकत्व के बारे में किस तरह सोचा? जब इलैक्ट्रॉन के बारे में कुछ भी पता नहीं था तो ऐसे में उन्होंने विद्युत अपघटन परीक्षण कैसे किया? मुझे अभी भी यह जानकर आश्चर्य होता है कि उन्होंने उस समय में बेंजीन की खोज कैसे की? जब उन्होंने पहली बार स्वर्ण के नैनो कण बनाए, तो उन्हें कैसे पता चला कि वे नैना कण ही हैं? उस समय इनको मापने का न तो कोई मापक था और न ही सूक्ष्मदर्शी ही था। जिन्होंने यह योग्यता विकसित कर ली, उन्हें इसमें सफलता प्राप्त हुई। यह सभी विषयों के संबंध में सही है, लेकिन सबसे अधिक रसायन विज्ञान के संबंध में।

1. गद्यांश के अनुसार, "रासायनिक अंतर्ज्ञान" से हमारा क्या आशय है?
   (1) यह किसी शोधार्थी का आंतरिक विवेक है, जिसे वह व्यक्त नहीं कर सकता है।
   (2) कोई भी उपकरण इसे माप नहीं सकता है।
   (3) माइकल फैराडे के पास यह निश्चित रूप से था।

Part-II

Instructions: Read the following passages carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

My main purpose of writing this book has been to give an intelligible account of India and its contemporary economic problems. My knowledge about India and its culture was almost nil until I referred the works of Dr. Radhakrishnan and others for my thesis on a topic related to Greek and Islamic art and culture. My first introduction to India and its people was through this literature only. The Hindu view of life, by Dr. Radhakrishnan, influenced me a lot. Later on in 1950, I wrote certain letters also to Dr. Radhakrishnan in which I sought clarification on some of my doubts. But this is an old story of some thirty years back. I found the Indian culture very rich and full of originality. It has a tremendous power to capture and assimilate others to the extent that the very flavour of their reality gets vanished and lost. Here grows a unique original blend of cultures: the Indian in flavour, the Indian in shape.

A little later as a member of an advisory board to the World Bank, UNESCO, ASIAN Bank and other world bodies, I took several chances to see India. Some of the academic organizations like J. N. U. also invited me for their programmes, where I got an opportunity to mix with the scholars and experts from different countries and from different fields, working in India. One such visit I specifically remember. One World Bank assisted drinking water project gave me a chance to have a close view of interior and remote parts of the country. It was sometime in 1974-1975. Throughout the journey, I was highly excited and a question was hitting me again and again- "Is the depth of the centuries old cultural traditions posing a threat to the modernization programme of India ?" It was the question which ultimately could conceive this book. Like the question the task was also difficult. This book

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इनके नीचे दिए हुए प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

इस पुस्तक को लिखने का मेरा मुख्य उद्देश्य भारत तथा इसकी समसामयिक समस्याओं को बोधगम्य तरीके से प्रस्तुत करना रहा है। भारत एवं इसकी संस्कृति के बारे में मेरा ज्ञान तब तक लगभग शून्य था जब तक मैंने अपने शोध प्रबंध के लिए यूनानी और इस्लामी कला व संस्कृति से संबंधित एक विषय पर डॉ. राधाकृष्णन एवं अन्य लोगों के कार्य को नहीं देखा। भारत तथा इसके लोगों से मेरा प्रथम परिचय इसी साहित्य के माध्यम से हुआ। डॉ. राधाकृष्णन द्वारा लिखित 'द हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ' ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। इसके बाद 1950 में, अपनी कुछ शंकाओं पर स्पष्टीकरण मांगने हेतु मैंने डॉ. राधाकृष्णन को कुछ पत्र भी लिखे। लेकिन यह कोई 30 वर्ष पुरानी कहानी है। मैंने भारतीय संस्कृति को अत्यधिक समृद्ध एवं मौलिकता से परिपूर्ण पाया। इसमें दूसरों को इस हद तक पकड़ने एवं आत्मसात करने की अद्भुत शक्ति है कि उनकी अधिकांश विभेदक विशिष्टताएँ गायब तथा अदृश्य हो जाती हैं। और, तब संस्कृतियों का एक अनुपम व मौलिक मिश्रण विकसित होता है जो स्वाद में और आकार में भारतीय होता है।

कुछ समय बाद विश्व बैंक, यूनैस्को, एशियाई विकास बैंक एवं अन्य वैश्विक निकायों के सलाहकार बोर्डों के सदस्य के रूप में मुझे भारत को देखने के कई अवसर प्राप्त हुए। जे. एन. यू. जैसे कुछ अकादमिक संगठनों ने भी मुझे अपने कार्यक्रमों में आमंत्रित किया, जहाँ मुझे भारत में कार्यरत विभिन्न देशों तथा विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों एवं विशेषज्ञों से घुलने-मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। ऐसा एक भ्रमण मुझे विशेष तौर पर याद है। विश्व बैंक द्वारा सहायता प्राप्त एक पेय जल-परियोजना ने मुझे देश के आंतरिक एवं सुदूर भागों को करीब से देखने का अवसर दिया। यह 1974-1975 के दौरान किसी समय की बात थी। पूरी यात्रा के दौरान, मैं अत्यधिक उत्साहित था तथा एक प्रश्न बार-बार मुझे कचोट रहा था, ''क्या सदियों पुरानी सांस्कृतिक परंपराओं की गहराई भारत के आधुनिकीकरण कार्यक्रम के लिए खतरा बन रही है?'' यही वह प्रश्न था जिससे अंततः इस पुस्तक की कल्पना की जा सकी। प्रश्न की ही भाँति कार्य भी कठिन था। यह पुस्तक, जो मूलतः देश की वर्तमान आर्थिक समस्याओं की